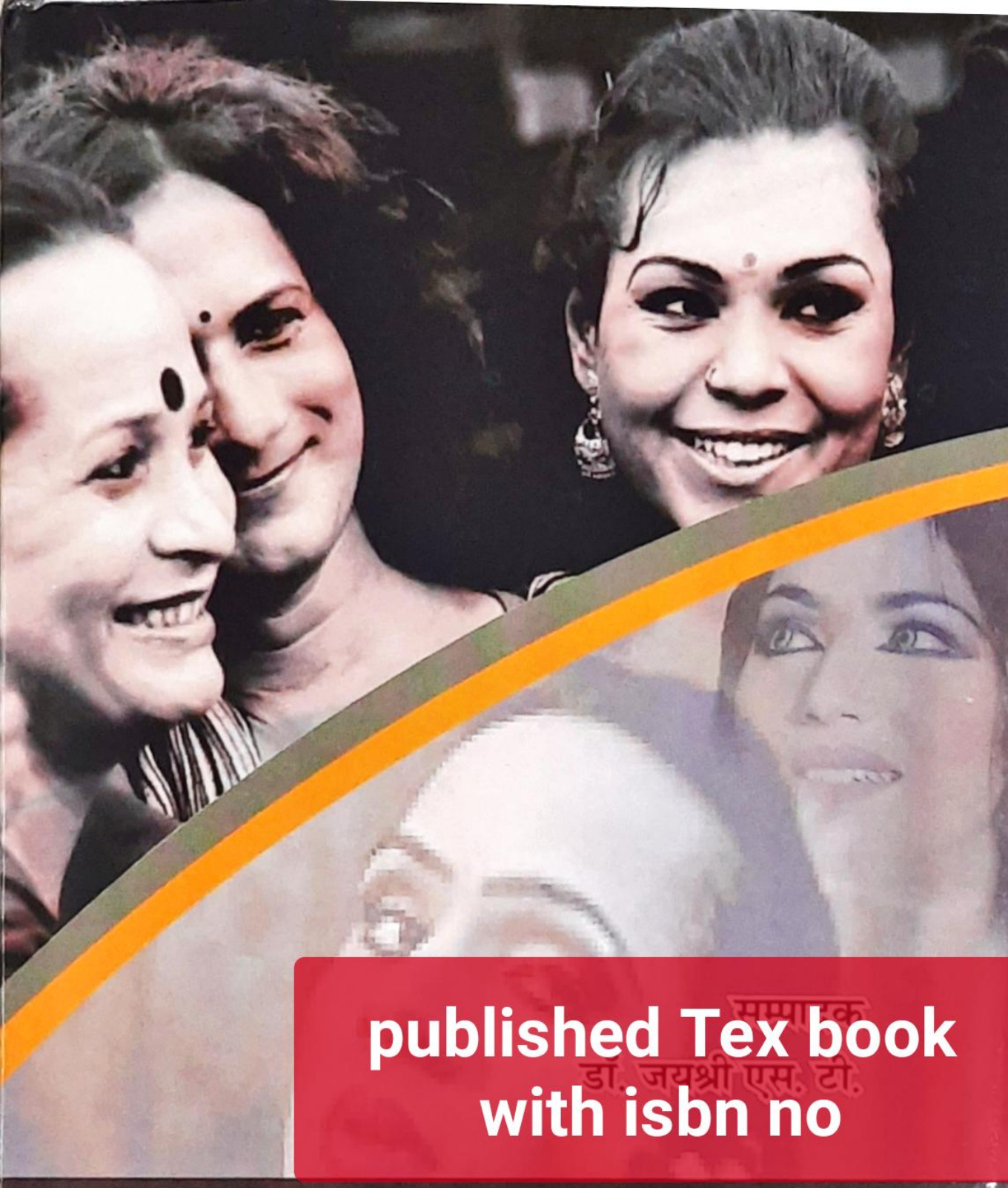

published Tex book
with isbn no

तीसरी दुनिया का यथार्थ

एक मूल्यांकन

5

समकालीन हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श

डॉ. एन. पाजी

साहित्यिक दृष्टिकोण से आज हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनेक विमर्शों पर चर्चा होती रहती है। समाज के अनेक उपेक्षित समस्याओं एवं वर्गों पर चिंतन और बहस हो रहे हैं। स्त्री विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, किन्नर विमर्श आदि इनमें प्रमुख है। इन सभी विमर्शों के अन्तर्गत हाशिए पर दबाये हुए एवं तिरस्कृत समुदाय की चर्चा होती है। समाज से बहिष्कृत लिंग निरपेक्ष 'किन्नर विभाग' के संबंध में आज बहुत अधिक चर्चा होती है। दरअसल समाज में स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त एक और वर्ग भी है जिन्हें हम घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं। संसार में केवल दो लिंगों के लिए मान्यता मिली है कि स्त्री और पुरुष के लिए लेकिन इनके अतिरिक्त एक और जाति भी है जिन्हें हम किन्नर हिजड़ा, उभयलिंग, ट्रांसजेंडर आदि नाम से पुकारते हैं। वर्तमान समय में इन्हें हिजड़े नाम से जाने जाते हैं।

'' 'किन्नर' शब्द हिमाचल प्रदेश के किन्नौर निवासियों के लिए प्रयुक्त होता था।''[1] इन वर्गों के पेशे थे कि विशेष संदर्भ में घर-परिवार जाकर बधाइयाँ गाकर आशीर्वाद देकर और रुपये लेकर विदा होना। इन जातियों को दक्षिण में हिजड़े के नाम से जानने लगे जो एक प्रकार की भिक्षावृत्ति से जीवन-यापन करने को विवश थे।'' पारिवारिक मांगलिक कार्यों, पर्वों, उत्सवों पर इनकी उपस्थिति को प्रायः संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता है। ट्रेनों, बसों, बाज़ारों में भी इनको देखा जा सकता है जो मुख्य रूप से वसूली करते हुए पाए जाते हैं।''[2] शास्त्रों में इनकी उपस्थिति शुभ सगुन के रूप में माने जाते हैं। परन्तु समाज में उनके प्रति मानवीय और संवेदनशील व्यवहार का घोर अभाव है।

किन्नर या हिजड़ों से तात्पर्य उन लोगों से हैं जिनके जननांग पूरी तरह से विकसित न हो पाए, अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जो पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता अनुभव करते हैं। इन किन्नरों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। वे हैं- बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। वास्तविक हिजड़ा तो बुचरा ही होते हैं, क्योंकि ये जन्मजात न पुरुष, न स्त्री होते हैं। नीलिमा वे हैं जो किसी कारणवश

स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित हैं। मानसा तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा स्त्रीलिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं। हंसा शारीरिक कमी या यौन न्यूनताओं के कारण किन्नर बने होते हैं। नकली हिजड़ों को अबुआ कहा जाता है जो वास्तव में पुरुष होते हैं किन्तु धन के लोभ में हिजड़े का स्वांग रख लेते हैं। जबरन बनाये गये हिजड़े छिबरा कहलाते हैं, परिवार से रंजिश के कारण इनका लिंगविच्छेदन कर इन्हें हिजड़ा बनाया जाता है।

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार पूरे भारत में 4.9 लाख किन्नर हैं। इसी जनगणना के अनुसार शिक्षित किन्नरों की संख्या सिर्फ 46 प्रतिशत ही है। इनमें आधे से अधिक नकली स्वांग करने वाले हिजड़े हैं। शेष दो लाख असली हिज़ड़ों में से केवल 400 ही जन्मजात हिजड़े हैं बाकी सब स्त्रैण स्वभाव के कारण हिज़डों के विभाग में गिनती की जाने वाले हैं।

किन्नरों के उद्भव के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित है। इनमें सर्वाधिक प्रचलित एक कथा भगवान श्रीरामचन्द्र जी से संबन्धित है। जब दशरथ की आज्ञा पालन करते हुए राम सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट आ गए तो उन्हें मना कर अयोध्या वापस लाने के लिए अयोध्या के सारे लोग चित्रकूट आऐ। लेकिन भरत तथा अयोध्यावसियों की प्रार्थना अस्वीकार करते हुए राम ने सभी नर-नारियों को वापस जाने को कहा। लेकिन हिजड़ों के संबन्ध में उन्होंने कुछ नहीं कहा। कहा जाता है कि श्रीरामचन्द्र जी का कोई स्पष्ट आदेश न होने के कारण हिजड़ों ने चौदह वर्ष तक वहीं रुक कर प्रभु की प्रतीक्षा करते रहे।

प्रचलित एक अन्य कथा का संबंध महाभारत कथा से है। इसके अनुसार एक बार अर्जुन को द्रौपदी से विवाह की एक शर्त के उल्लंघन के कारण राज्य से निष्कासित कर तीर्थयात्रा पर भेजा जाता है। भ्रमण के अवसर पर अर्जुन उत्तर-पूर्व प्रदेश में पहुँच गया जहाँ उनकी मुलाकात एक विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से होती है। दोनों के बीच प्यार पलते हैं और विवाह कर लेते हैं। उलूपी एक पुत्र को जन्म देती है और उसका नाम अरावन रखा जाता है। कुछ समय बाद अर्जुन दोनों को वहीं छोड़ कर आगे निकल जाते हैं। अरावन अपनी माँ के साथ नागलोक में रहता है। युवा होने पर अरावन अपने पिता के पास आता है। इस समय कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध चल रहा था। अर्जुन अरावन को युद्ध करने के लिए रणभूमि में भेज देता है।

युद्ध के अन्त में पांडवों को अपनी जीत के लिए माँ 'काली' के चरणों में नरबलि हेतु एक राजकुमार की ज़रूरत पड़ती है। कोई भी राजकुमार तैयार नहीं होता तो अरावन खुद प्रस्तुत करता है। अरावन बलि के लिए शर्त रखी कि बलि करने से पूर्व की रात एक सुन्दर स्त्री से विवाह करना है। शर्त के कारण बहुत संकट की स्थिति उत्पन्न होती है। कोई भी राजा यह जानते हुए कि अगले दिन अपनी बेटी विधवा हो जाएगी, अरावन से शादी के लिए तैयार नहीं होता है। जब कोई भी रास्ता नहीं बचता है तो भगवान

श्रीकृष्ण स्वयं मोहिनी रूप स्वीकार कर अरावन से शादी करते हैं। अगले दिन अरावन अपना जीवन 'काली' के चरणों पर अर्पित करता है। मृत्यु के बाद मोहिनी काफी देर विलाप भी करती है। पुरुष होते हुए भी स्त्री में श्रीकृष्ण अरावन से शादी की। इसलिए किन्नर जो स्त्री रूप में पुरुष माने जाते हैं। वे सभी कथाएँ मिथक के रूप में पुराण में मिलती हैं। तमिलनाडु के किन्नर अरावन की पूजा करते हैं और कई जगहों पर अरावन के मन्दिर बन चुके हैं। इनका सबसे प्राचीन मंदिर विल्लुपुरम जिले के कूवागम गाँव में है। इस मन्दिर में अरावन की पूजा की जाती है। हर साल तमिल नववर्ष की पहली पूर्णिमा को 18 दिनों तक चलने वाले उत्सव होते हैं। इस अवसर पर किन्नर लोग वहाँ एकत्र होकर नाचते गाते हैं और अरावन के विवाह की तैयारियाँ करते हैं। तमिल संघम साहित्य में इसका विवरण मिलता है। इसी प्रकार बंगाल के किन्नर समुदाय भगवान श्रीकृष्ण की आराधना करते हैं और कर्नाटका के किन्नर समुदाय देवी की उपासना करते हैं।

समाज में किन्नरों की प्रतिष्ठा अत्यंत हेय दृष्टि से देखी जाती है। यदि किसी परिवार में बुचरा अर्थात् हिजड़े का जन्म होता है, तो परिवार के सदस्य उसे अपने परिवार से दूर करने का प्रयास करते हैं। हिजड़े के माँ-बाप भी यही संदेह करते हैं कि बच्चा परिवार की प्रतिष्ठा नष्ट करेगा। अतः वे जल्द से सन्तान को हिजड़ों के बीच छोड़ देते हैं। नीलिमा कोटि के हिजड़े किसी-न-किसी कारण स्वयं हिजड़े बन जाते हैं। मनसा मानसिक तौर पर स्वयं हिजडे के निकट समझते हैं। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा देकर इन्हें वापस ले सकता है। हंसा कोटि के हिज़डे यौन अक्षमता के कारण हिजड़ों के साथ जोड़ लेते हैं। अबुआ किन्नर प्रायः पुरुष लोग हैं जो साड़ी पहनकर किन्नर बनने का नाटक करते हैं दूसरों से धन लूटने का काम करते हैं। रात के समय सड़कों पर घूमकर ड्राइवर लोगों के साथ प्रकृति विरुद्ध संसर्ग से यौन क्षुधा शांत करते हैं। असली किन्नर स्वभावतः स्त्री होते हैं और पुरुष के प्रति इनमें आकर्षण होता है। लेकिन नकली किन्नर वास्तव में पुरुष होते हैं और इनका आकर्षण स्त्रियों के प्रति होता है। छिबरा नामक किन्नर वर्ग अत्यंत क्रूर एवं भयावह काम करने वाले हैं। वे लोग शत्रु के परिवार के लड़के-लड़कियों को उठाकर उनके लिंग हटवाकर किन्नर बना देते हैं। ऐसे व्यक्ति को आजन्म नरक तुल्य जीवन बिताना पड़ता है।

आज भारतीय साहित्य में इन उपेक्षित किन्नर वर्गों पर चिंतन हो रहा है। समाज में इन्हें कोई स्थान नहीं मिला है। कोई भी किन्नर को अपने घर में बुलाना नहीं चाहता है और उनसे सामाजिक संपर्क भी करना नहीं चाहता है। किसी शुभ अवसर पर ये बधाइयाँ देने आते हैं तो घरवाले जल्द ही उन्हें कुछ देकर इनसे जान छुड़ाना चाहते हैं।

आज समाज में, राजनीति में, संविधान में, अदालत में और साहित्य में भी इनकी समस्याओं की चर्चा एवं समाधान की कोशिश हो रही है। अब इन्हें राजनीति में और चुनाव में भाग लेने का अधिकार मिला है। इनकी यातनाओं पर चर्चा होती रहती है। साहित्य में तृतीय लिंगी विमर्श व किन्नर विमर्श के नाम पर महत्वपूर्ण चिंतन हो रहा

है। नीरजा माधव का 'यमदीप', प्रदीप सौरभ की 'तीसरी ताली', महेन्द्र भीष्म की 'किन्नर कथा', 'मैं पायल', निर्मला भुराडिया का 'गुलाम मंडी', चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नं- 203 नाला सोपारा' आदि किन्नरों की ज्वलंत समस्या को लेकर सामने आए हैं। इन उपन्यासों की कथावस्तु किन्नर समुदाय की है जो उनकी पीड़ा, व्यथा, एवं भयानक त्रासदी की स्थिति को चित्रित करते हैं। यमदीप उपन्यास की कथा 'नाज बीबी' की कथा है जो किन्नर व्यक्ति एवं उपन्यास की नायिका भी है। तीसरी ताली में भूख और गरीबी के कारण हिजड़े के धन्धे अपनाने-वाले लोगों की कहानी अत्यंत बारीकी से हुआ है। किन्नर कथा में राजघराने में पैदा हुई चंदा की कथा है। वह राजपरिवार के लिए आश्चर्यजनक घटना बन जाती है। गुलाम मंडी में तिरस्कृत किन्नरों की कथा चित्रित है। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में रहने वाले छोटे लड़के विनोद उर्फ बिन्नी की कथा है। वह भी किन्नर है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि इन सभी उपन्यासों में किन्नर समाज की व्यथा-कथा अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित हुई है। उपेक्षित किन्नरों की असली स्थिति, जीवन-यापन, मानसिक संघर्ष, परिस्थितियों के प्रति संघर्ष, अपने अधिकार के प्रति माँग, सामाजिक प्रतिष्ठा की माँग, शिक्षा की माँग आदि को यथावत रूप में चित्रित करने में आधुनिक हिन्दी साहित्य के उपन्यासकार एवं उनकी रचनाएँ सफल हुई हैं।

संदर्भ -

1. बिश्नोई मिलन, किन्नर विमर्श : साहित्य और समाज, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ. 24
2. दिवाकर शर्मा, क्रांतिदूत पत्रिका, 2017 दिसंबर, पृ. 4 पूर्णायन, मध्यप्रदेश 473551
3. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2017
4. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2011
5. डॉ. पुनीत बिसारिया http//www.blogspot.com.
6. महेन्द्र भीष्म, 'किन्नर कथा', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2011

●